कलीसिया अध्याय 5

1.	**प्रार्थना**

समूह अगुवा। परमेश्वर की आत्मा द्वारा अगुवाई पाने, उसकी उपस्थिति के प्रति संवेदनशीलता तथा उसकी आवाज सुनने के लिए **प्रार्थना** करें।

अपने समूह तथा कलीसिया निर्माण करने के सम्बन्ध में इस अध्याय को परमेश्वर के हाथों में समर्पित करें।

2.	**बाँटना** (20मिनट) *[शान्त समय]* **मरकुस 15:1-16:20+1कुरिन्थियों 1**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में **साझा करें** कि आपने दिये गये अनुच्छेद (मरकुस 15:1-16:20 व 1 कुरिन्थियों 1) में शान्त समय में क्या सीखा।

अगर कोई व्यक्ति अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3.	**याद करना** (5 मिनट) *[मसीही चरित्र]* **(5) फिलिप्पियों 2:3-4**

दो दो करके पुनरावलोकन करें।

(2) **नम्रता:फिलिप्पियों 2:3-4।** विरोध या झूठी बड़ाई के लिए कुछ न करो,पर दीनता से एक दूसरे को अपने से अच्छा समझो। हर एक अपने ही हित की नहीं,वरन दूसरों के हित की भी चिन्ता करें।

4	**बाइबल अध्ययन** (85मिनट) *[यूहन्ना रचित सुसमाचार]* **यूहन्ना रचित सुसमाचार का परिचय**

परिचय। ईस्टर मसीही पर्व हैं जिसमें हम यीशु मसीह के पुनरूत्थान को स्मरणोत्सव के रूप में मनाते हैं। हम इस अध्याय में सीखेगें कि बाइबल यीशु मसीह के पुनरूत्थान और उसके प्रभाव के बारे में क्या सिखाती है। हम सीखेगें कि उसके पुनरूत्थान के बारे में कौन कौन सी भविष्यद्वाणियां की गयी थीं,जब वह मृतकों में से जीवन उठा तो क्या हुआ, और उसका पुनरूत्थान आपके लिए महत्वपूर्ण है।

क. यीशु मसीह के पुनरूत्थान के सम्बन्ध में भविष्यद्वाणियां

1. यीशु मसीह के पुनरूत्थान से सम्बन्धित पुराने नियम में उपलब्ध भविष्यद्वाणियां।

(1) अय्यूब 10:25-27

अय्यूब की पुस्तक सम्भवत: पुराने नियम में सबसे पुरानी पुस्तक है जिसे लगभव 1900 ई.पू लिखा गया था। इतिहास के इतने वर्षों पहले भी अय्यूब कहता है कि वह उसके उद्धारकर्ता के पुनरूत्थान के बारे में जानता है(यीशु,जो परमेश्वर है और जो पृथ्वी पर खड़ा होगा)और वह खुद भी मृतकों में से जी उठेगा। वह कहता है "मुझे तो निश्चय है कि मेरा छुड़ानेवाला जीवित है और वह अन्त में पृथ्वी पर खड़ा होगा।और मेरी खाल के इस प्रकार नष्ट हो जाने के बाद(अर्थात उसकी मृत्यु के बाद) भी, मैं शरीर(अर्थात मेरी देह) में होकर परमेश्वर का दर्शन पाऊँगा।"

(2) भजन 16:8-11

करीब 1000 ईपू राजा दाऊद ने कहा कि परमेश्वर यीशु मसीह के प्राणों को यूँ त्याग न देगा, और न ही वह अपने अभिषिक्त जन को सड़ने देगा।

(3) भजन संता 118:22-24

जिस पत्थर को राजमिस्त्रियों ने तुच्छ जाना वह ही "कोने के सिरे का पत्थर बन गया",अर्थात वह ही सबसे महत्वपूर्ण और निर्णायक पत्थर है(इमारत की नींव का पत्थर या कोने का पत्थर)। मसीह, जिसे यहूदी लोग तुच्छ जानेगें और क्रूस पर चढ़ा

देगें,वह ही मृतकों में से जी उठा उद्धारकर्ता बन जाएगा। । वह ही पृथ्वी पर रहने वाले हर एक व्यक्ति की मंजिल को तय करेगा। (मत्ती 21:42-44; 1पतरस 2:4-8)!

(4) यशायाह 53:11-12।

मैनुएल 5, परिशिष्ट 1 देखें। 700 ई पू, भविष्यद्वक्ता यशायाह ने भविष्यद्वाणी की कि परमेश्वर का दास (यीशु मसीह) मृतकों में से जी उठेगा और सदा काल तक अमर रहेगा।

(5) यशायाह 25:8

यशायाह ने लोगों के पुनरूत्थान की भी भविष्यद्वाणी की। उसने यीशु मसीह के दूसरे आगमन को देखा और भविष्यद्वाणी की,"वह मृत्यु का सदा के लिए नाश करेगा, और प्रभु यहोवा सभों के मुख पर से आँसू पोछ डालेगा...."यीशु अपने दूसरे आगमन पर धर्मी और दुष्ट दोनों को पुन: जीवित करेगा। वह उनके विश्वास व अविश्वास के आधार पर उनका न्याय करेगा। धर्मिया को अनन्त जीवन की मीरास मिलेगी और अविश्वासियों को अनन्त दण्ड प्राप्त होगा। (मत्ती 25:46; प्रेरितों 24:15)।

(2) यीशु के पुनरूत्थान से सम्बन्धित नये नियम में की गयी भविष्यद्वाणियां।

सिखाएं। उसने मरने और पुन: जी उठने से पहले कई बार, यीशु मसीह ने बताया था कि वह मरेगा और पुन: जी उठेग। मरकुस 8:31,9:31; और 10:33-34 में वह स्पष्ट रूप से भविष्यद्वाणी करता हैं कि वह अपने क्रूसीकरण के तीसरे दिन जिन्दा हो जाएगा। यीशु मसीह समय अन्तराल के बारे में (तीन पूरे दिनों) बात नहीं कर रहे थे, परन्तु वह समय की ओर इशारा कर रहे थे(उसके क्रूसीकरण के तीसरे दिन के बाद)। तीन दिनों के भीतर ही वह अपने देह के मन्दिर को पुन: खड़ा कर देगा। (उदा. यूहन्ना 2:19 तीन दिनों में)।

ख. यीशु मसीह के पुनरूत्थान के इर्द गिर्द होने वाली घटनाएं।

1. यीशु मसीह के पुनरूत्थान का समय।

पढ़ें मरकुस 18:1-6। यीशु अपने क्रूसीकरण के तीसरे दिन जी उठा। वह निसान के 17वें दिन भोर को बहुत जल्दी जी उठा। बाइबल में "रविवार" को सप्ताह का पहला दिन माना जाता है। क्योंकि यीशु मसीह का पुनरूत्थान रविवार के दिन हुआ था इसी कारण सारें संसार भर में लोग ईस्टर का दिन रविवार को मनाते हैं और रविवार को ही वे अपने जीवित परमेश्वर की आराधना करने के लिए जमा होते हैं!

जबकि मरकुस "तीसरे दिन" कहावत का इस्तेमाल करता है (ग्रीक: मेटा ट्राइस हेमेरास)(मरकुस 8:31,9:31 और 10:33-34),लेकिन मत्ती ने बताया कि "तीसरे दिन" का वास्तव में क्या अर्थ है(ग्रीक : टे ट्राईट हेमेरा)(मत्ती 16:21; मत्ती 17:22-33; मत्ती 20:18-19)। यूनानी भाषा में "दिन" शब्द का अर्थ दिन का कोई भी पहर हो सकता है। यीशु मसीह शुक्रवार देर रात से लेकर रविवार की सुबह तड़के तक कब्र में ही रहे।

2. कब्र पर आने वाली स्त्री।

पढ़ें मत्ती 28:1;मरकुस 16:1, लूका 24:9-10; यूहन्ना 20:1-2।

खोजें और चर्चा करें। रविवार की सुबह तड़के कितनी महिलाएं कब्र पर आयी थीं?

नोट्स।

यीशु की कब्र पर मिलने या देखने जाने वाली महिलाओं पर लिखित लेखे के सन्दर्भ में चारों सुसमाचारों में किसी भी प्रकार का विरोधाभास नहीं है। मत्ती संक्षेप में लिखता है कि केवल दो महिलाएं ही कब्र पर गयी थी: मरियम मगदीलीन और मरियम(यूहन्ना की माता)। मरकुस तीन महिलाओं का जिक्र करता है: मरियम मगदीलीन, मरियम जो यीशु की माता थी और शलोमी। लूका भी चार से ज्यादा महिलाओं के समूह का जिक्र करता है लेकिन नाम केवल तीन ही के बताता है: मरियम मगदीलीन, मरियम जो यीशु की माता थी और जोएना। यूहन्ना कहता है कि कब्र पर एक से ज्यादा महिलाएं थी: (क्योंकि मरियम मगदीलीन ने कहा: "हमें" नहीं पता...)(यूहन्ना 20:2)। फिर भी यूहन्ना अपने लेखे को मरियम मगदीलीन तक सीमित रखता है। अत: सच्चाई यह है कि कब्र पर करीब चार महिलाओं से ज्यादा महिलाएं थी लेकिन हर एक प्रचारक ने अपने तरीके से घटना का वर्णन किया है।

स्त्रियों के कब्र पर आने के समय को लेकर भी कोई विरोधाभास नहीं था। जब वे कब्र पर जाने के लिए तैयार हुए उस समय अन्धेरा था लेकिन जब वे कब्र पर पहुँचे तो सूर्य उदय हो चुका था(मरकुस)।

3. कब्र पर पहलेदारों का ठहराया जाना।

पढ़ें मत्ती 17:62-28:15

खोजें और चर्चा करें। यीशु मसीह निश्चय ही जी उठा है प्रमाणों को पहरेदारों की उपस्थिति किस प्रकार अधिक पुख्ता करती है?

नोट्स।

यीशु मसीह की देह को उसके अनुयायी चुरा न सके और यह न कह सके कि यीशु जीवित हो गया है इस कारण सरकार ने मुख्य याजक और फरीसियों से कहा कि वे वहां पर पहरेदारों को नियुक्त कर दें और कब्र को पत्थर से बन्द करके उस पर एक मुहर लगा दी जाए। कब्र पिलातुस की मुहर की छाप द्वारा मुहरबन्द पत्थर द्वारा पूरी तरह बन्द व सुरक्षित थी। करीब दस से तीन सैनिकों के बीच में पहरेदारों को कब्र की सुरक्षा के लिए नियुक्त किया गया था,ताकि कोई उसके नज़दीक जाने की हिम्मत न कर सके।

इसके अलावा, यीशु मसीह के पुनरूत्थान के समय बड़ा भुईडोल हुआ और सैनिकों को डर के मारे लकवा मार गया। उसके बाद यहूदी धार्मिक अगुवों ने सैनिकों को यह कहने के लिए बड़ी रकम घूस के रूप में दी कि वे लोगों में यह बात फैला दें कि जब सैनिक सो रहे थे तो यीशु के चेलों ने यीशु की देह को चुरा लिया। हालांकि रोमी सिपाही कभी भी अपने कर्तव्यों में ढिलाई नहीं बरतते हुए सोए नहीं होगें। आज भी कई धार्मिक अगुवों के द्वारा वही अफवाह फैलाई जाती है कि यीशु का पुनरूत्थान नहीं हुआ था।

4. कब्र के मुंह को बन्द करने वाला पत्थर।

पढ़ें मरकुस 15:46-16::4; मत्ती 28:2

खोजें और चर्चा करें। कब्र के मुंह को बन्द करने वाले पत्थर को किसने हटाया?

नोट्स।

कब्र के मुंह पर गोल चपटा बड़ा पत्थर लुढ़का कर रखा गया था। कब्र में प्रवेश करने के लिए, चार बलवन्त पुरूषों की जरूरत पड़ती थी जो उस पत्थर को ऊपर ढलाव की ओर चढ़ा सकें। यीशु मसीह के चेले मौजूद नहीं थे और अगर होते भी तो सैनिक उन्हें ऐसा नहीं करने देते। लेकिन हम मत्ती में पढ़ते हैं कि बढ़ा भूइडोल हुआ और स्वर्ग से एक स्वर्गदूत उतरा। इस स्वर्गदूत ने उस पत्थर को लुढ़काया(ग्रीक :अपोकुलियो)(सामान्य भूलकाल) (सम्भवत: उसने उस पत्थर को खांचे पर से उठाकर ज़मीन पर समतल रख दिया) और फिर उस पर बैठ गया। कब्र के मुंह पर से बिना किसी मनुष्य की सहायता के हटाया जान भी मृत्यु पर परमेश्वर की विजय का प्रमाण था। स्त्रियों ने यह घटना होते हुए अपनी आंखों से नहीं देखी। उन्होंने केवल परिणाम को देखा। स्वर्गदूत ने पत्थर यीशु को कब्र से बाहर निकालने के लिए नहीं हटाया था वरन इसलिए कि महिलाएं और दूसरे लोग यह देखने के लिए कब्र के *भीतर* जा सकें।

5. कब्र पर आया स्वर्गदूत।

पढ़ें मत्ती 28:2-3; मरकुस 16:5; लूका 24:4; यूहन्ना 20:11-12।

खोजें और चर्चा करें। कब्र पर कितने स्वर्गदूत थे?

नोट्स।

मत्ती ने एक स्वर्गदूत का जिक्र किया है जो बाहर उस बड़े पत्थर पर बैठ गया था। उसका रूप बिजली के समान और उसके कपड़े सफेद बर्फ के समान थे। मरकुस जिसने अपना सुसमाचार पतरस की गवाही के आधार पर लिखा था, लिखत है कि एक स्वर्गदूत कब्रं के भीतर भी बैठा हुआ था। लूका ,जिसने उन स्त्रियों से बातचीत की थी(लूका 1:1-4), दो स्वर्गदूतों के बारे में बताता है, कब्र के भीतर महिलाओं के पास में आकर खड़े हो गये और उनके कपड़े प्रकाश से चमक रहे थे। यूहन्ना बताता है कि बाद में वे मरियम मगदीलिनी आकर कब्र के बाहर रोने लगी। लेकिन जब वह कब्र में प्रवेश करने के लिए झुकी, तो उसने दो स्वर्गदूतों को अर्थात एक को यीशु के पैरों के पास और दूसरे को उसके सिर के पास बैठे हुए देखा था। यहां पर भी हम चारों सुसमाचारों में किसी प्रकार के विरोधाभास को नहीं देखते हैं,क्योंकि मत्ती और मरकुस ने यह नहीं कहा कि वहां केवल एक ही स्वर्गदूत था। वहां कम से दो स्वर्गदूत थे जो उस कब्र कें पास घूम रहे थे।

6. कब्र में पड़े हुए लिनेन के कपड़े।

पढ़ें यहन्ना 19:38-20:9; मरकुस 16:1-8 ;लूका 24:1-12।

खोजें और चर्चा करें। किस प्रकार यीशु की देह के बिना उसके लिनेन से बने कपड़े इस बात को और पुख्ता करते हैं कि यीशु मसीह नि:सन्देह मृतकों में से जीवित हुआ था?

नोट्स।

उस समय की रीति के अनुसार, अरिमितिया के युसुफ और नीकदूमुस ने यीशु की देह को बहुत बार लिनेन के वस्त्र से लपेटा और साथ में सुगन्धित द्रव्य और मसालों को रखा। उसके पश्चात उन्होंने यीशु की देह को नयी कब्र में रखा जो युसुफ की थी। जब स्त्रियां यीशु की कब्र पर पहुँची तो उन्हें पता चला कि पत्थर कब्र के मुँह पर से लुढ़का पढ़ा है। एक

स्वर्गदूत ने उन्हें कब्र में आने का और उस स्थान को देखने का आमन्त्रण दिया जहां यीशु को रखा गया था। और उन्होंने भीतर जाकर देख तो यीशु की देह वहां पर नहीं थी। कांपते और रोती हुई, वे कब्र से बाहर भागीं। पहले तो उन्होंने किसी से कुछ नहीं कहा(मरकुस) बाद में उन्होंने वापस जाकर यीशु के चेलों को बताया (मत्ती और लूका)।

यूहन्ना सुसमाचार कहता है कि मरियम मगदलीनी ने पत्थर को वहां से लुढ़का हुआ देखा, और उसने सोचा कि यीशु की देह को उठाकर किसी और स्थान पर रख दिया गया है। इस कारण वह दौड़कर यूहन्ना और पतरस के पास बताने के लिए गयी। मत्ती और लूका कहते हैं कि उस स्थान को देखने के बाद जहां यीशु को रखा गया था और स्वर्गदूतों द्वारा बताये जाने के बाद कि यीशु मुर्दों में से जी उठा है, वे इस घटना के बारे में बताने के लिए यीशु के चेलों के पास गयीं। फिर भी, चेलों ने उनकी बातों पर विश्वास नहीं किया, क्योंकि "क्योंकि उनकी बातें उन्हें कहानी सी जान पड़ीं"(लूका 24:11)।

उसी बीच पतरस और यूहन्ना कब्र की ओर लपके, तो उन्होंने कब्र में घुसकर देखा कि बिना यीशु की देह के उसके कपड़े वहां तह बनाकर रखे हुए हैं। उन्होने उस कपड़े को भी देखा जो यीशु के सिर पर बांधा गया था, उसके सिरहाने तह बनाकर रखा हुआ देखा। यह सम्भव है कि लिनेन के कपड़े की पट्टियों में एक खाली कृमिकोष विकसित हुआ हो,जो इस बात को प्रमाणित करता है कि लिनेन से बनी कपड़े की पट्टियां भी यीशु की देह को पुर्नजीवित होने सक नही रोक सकी और वह उसे भेदकर बाहर निकल गया। इसके अलावा उसके कपड़ों का तह बनाकर वहां रखा होना इस बात को प्रमाणित करता है कि न तो चेले और न ही उसका कोई शत्रु उसकी देह को चुराकर ले गया। इतने प्रमाण पतरस और यूहन्ना के लिए यह विश्वास करने हेतू काफी थे कि यीशु मसीह मुर्दों में से जीवित हो गया है। शुरू में तो उन्हें भजन संहिता 16:10-11, भजन 118:22-24 और यशायाह 53:11-12 समझ नहीं आया होगा। लेकिन जो कुछ उन्होंने उस खाली कब्र में देखा उसे देखकर उनका विश्वास जागा और वे पुनरूत्थान के अभिप्राय को समझने लगे। वे समझ गये ही पुनरूत्थान परमेश्वर की योजना का एक 'आवश्यक' भाग है(लूका 9:22, 44-45; 18:31-34;22:37; 24:44)! पिन्तेकुस्त के बाद (अर्थात पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने के बाद) यह और ज्यादा स्पष्ट हो गया।

7.गलील में एकत्र होना।

पढ़ें मत्ती 28:5-7,16-17;लूका 24:33-36;यूहन्ना 20:17-20।

खोजें और चर्चा करें। यीशु मसीह के पुनरूत्थान के बाद यीशु अपने चेलों से कहां मिला?

नोट्स।

स्वर्गदूत ने चेलों को बताया कि यीशु अपने चेलों से पहले गलील पहुच जाएगा। फिर भी ऐसा प्रतीत होता है कि यीशु का प्रथम प्रगटीकरण गलील में नहीं, लेकिन यरूशलेम(यहूदिया में) में था। इसमें कोई विरोधाभास नहीं है, क्योंकि यीशु में प्रतिज्ञा की गयी बातों से अधिक करने का अधिकार व योग्यता है। लेकिन बाद में जब वह गलील को गया, तो इस बात के कोई प्रमाण नहीं है कि वह अपने चेलों के बाद में वहां पहुंचा था।

8.यीशु मसीह के पुनरूत्थान के चश्मदीद गवाह।

पढ़ें प्रेरितों 1:3; मरकुस 16:9-14; 1कुरि 15:1-8

खोजें और चर्चा करें। किस प्रकार से यीशु मसीह के पुनरूत्थान के बाद उसका लोगों पर प्रगट होना एतिहासिक प्रमाणों में वृद्धि करता है कि यीशु मसीह निश्चय ही मृतकों में से जी उठे थे।

नोट्स।

यीशु मसीह का पुनरूत्थान गुप्त रूप में नहीं हुआ। जिस प्रकार से प्राकृतिक विज्ञान अनुभवी परीक्षणों और प्रमाणों पर आधारित होता है,उसी प्रकार इतिहास का विज्ञान विश्वासयोग्य गवाहियों पर आधारित होता है। यीशु मसीह के पुनरूत्थान के सैकड़ों चश्मदीद गवाह थे। हालांकि आधुनिक प्राकृतिक विज्ञान के पास आलौकिक कामों के बारे में कोई सफाई मौजूद नहीं है, यीशु मसीह का पुनरूत्थान एक ऐसा ऐतिहासिक कार्य है जिसका इनकार नहीं किया जा सकता।

प्रेरितों 1:3 में हम पढ़ते हैं कि 40 दिनों के अन्तराल में यीशु मसीह ने अपने चेलों को बहुत से ऐसे प्रमाण दिये जिससे साबित हो कि वह जीवित है। जब आप चारों सुसमाचारों को देखते हैं, तो आप पाएगें कि जिस रविवार को वह जी उठा उसी दिन वह पाँच बार लोगों पर प्रगट हुआ:

---

1 ग्रीक:इन्दुलीसो(सिद्ध काल)। शरीर को लिलेन के कपड़े से "लपेटकर"(लूका) और सिर से बंधा कपड़ा "लपेटकर"(यूहन्ना 20:7)

(1) मरियम मगदलीनी पर प्रगट हुआ

सूर्य उदय होने से पूर्व जब वह मरियम मगदलीनी कब्र पर पहुँचा, तो उसने पाया कि पत्थर को उठाकर वहां से अलग रख दिया गया था (पूर्ण काल)। इस कारण वह बताने के लिए यूहन्ना और पतरस के पास भागी। उसके बाद यूहन्ना और पतरस आगे आगे भागे और मरियम उनके पीछे पीछे भागी। जब उन्होंने देख लिया कि कब्र खाली है और वहां पर कपड़ों को छोड़कर और कोई नहीं है तो वे वापस घर आ गये। जब मरियम मगदलीनी कब्र पर वापस आयी, तो वहां न पाकर वह रोने लगी क्योंकि यीशु मसीह की देह को वहां पर न पाया और वह नहीं जानती थी उन्होंने उसे कहां रखा था। तब यीशु उस पर प्रगट हुआ और उसने यीशु के पैरों गिर पड़ी। यीशु ने उससे कहा कि वह चेलों के पास जाकर यह समाचार दे कि वह परमेश्वर पिता के पास स्वर्ग में जा रहा है। यह रविवार की सुबह पहली बार था जब यीशु मसीह किसी पर प्रगट हुआ(मरकुस 16:9;यूहन्ना 20:11-18)।

(2) दूसरी स्त्रियों पर प्रगट होना।

जब सुबह भोर होने से पहले स्त्रियां कब्र पर पहुँची, तो उसने पाया कि पत्थर कब्र के मुँह से लुड़का हुआ पड़ा है (ग्रीक:अपोकुलिओ) (पूर्णकाल)। वे कब्र में गये लेकिन उन्होनें वहां देह को नहीं पाया। वहां पर दो स्वर्गदूत थे जिन्होने उससे बातें की। लेकिन यूहन्ना और पतरस के अलावा और किसी ने उनकी बातों पर विश्वास नहीं किया जो पहले की कब्र पर जाकर आ चुके थे। और उन स्त्रियों ने भी जो कब्र पर दुबारा आयी थी(लूका 24:9-11)। रास्ते में कहीं वह अचानक से उन्हें मिला और वे भी यीशु के पैरों पर गिरकर उसकी आराधना करने लगीं। यीशु ने उनसे कहा कि वे चेलों के पास जाएं और उनसे गलील में जाने को कहें जहां यीशु उनसे मिलेगा। यह दूसरी बार था जब वह रविवार के दिन प्रगट हुआ(मत्ती 28:9-10)।

(3) पतरस पर प्रगट होना।

उसके पश्चात यीशु पतरस पर प्रगट हुआ(लूका 24:34)।

(4) इम्माऊस के मार्ग पर अपने अनुयायियों पर प्रगट होना।

यह रविवार दोपहर की बात है(लूका 24:13-33)

(5) अपने चेलों पर प्रगट होना जब थोमा उनमें नहीं था।

रविवार की शाम को जब चेले एक कमरे में दरवाजा बन्द करके एकत्र थे यीशु उनके बीच प्रगट हो गया। (लूका 24:36-43;यूहन्ना 20:19-23)

(6) अपने चेलें पर प्रगट होना जब थोमा भी उनमें शामिल था।

एक सप्ताह के बाद यीशु रविवार को ही यीशु अपने सभी चेलो पर प्रगट हुआ जिसमे थोमा भी शामिल था(यूहन्ना 20:24-31)।

(7) अन्य जगहों पर प्रगट होना।

उसके बाद यीशु तिरबियास की झील के पास अपने चेलों पर प्रगट हुआ(यूहन्ना 21:1-14), ग्यारह चेलों को वह गलील की पहाड़ियों पर दिखाई दिया (मत्ती 28:16-20), 500 से ज़्यादा भाईयों को वह एक बार में प्रगट हुआ, वह याकूब पर प्रगट हुआ(जो यीशु का भाई था, जो बाद में यरूशलेम कलीसिया का अगुवा ठहरा और जिसने याकूब की पत्री को भी लिखा), सारे प्रेरितों पर प्रगट हुआ (1 कुरि 15:6-7), यरूशलेम में प्रेरितों पर प्रगट हुआ(प्रेरितों 1:4), अपने स्वर्गारोहण से पूर्व वह जैतून के पहाड़ पर अपने 11 चेलों को दिखाई दिया(प्रेरितों 1:6)और अन्त में वह दमिश्क के मार्ग पर पौलुस को दिखाई दिया (1कुरि 15:8)।

यीशु मसीह का पुनरूत्थान एक अति प्रमाणित ऐतिहासिक घटना है।

ग.मसीहियों के लिये यीशु मसीह के पुनरूत्थान का क्या अभिप्राय है

सिखाएं। इतिहास का कोई भी भविष्यद्वक्ता या फिर जिसने खुद भविष्यद्वक्ता होने का दावा किया हो मृतकों में से जीवित नहीं हुआ। दूसरों धर्मो के सभी नबी व भविष्यद्वक्ता सभी अपनी अपनी कब्रो में विश्राम कर रहे हैं। यीशु मसीह ही एकमात्र ऐसा मनुष्य है जो मृतकों में से जी उठा और आज भी जीवित है।

1.यीशु मसीह यह दिखाने के लिए मृतकों में से जीवित हुए कि परमेश्वर पिता ने उद्धार के प्रति उसके किये हुए कार्यों को स्वीकार कर लिया हे।

पढ़ें फिलिप्पियों 2:5-11;1कुरिन्थियों 15:42-46; रोमियों 1:3-4।

(1) यीशु मसीह के पुनरूत्थान (सारे आकाशमण्डल में सर्वोच्च स्थान पर उठा लिये जाने)का प्रथम परिणाम यह है कि इससे प्रमाणित होता है कि परमेश्वर पिता ने उद्धार(प्रायश्यित का बलिदान) के निमित्त किये गये कामों को स्वीकार कर लिया है।

यीशु मसीह ने अपने आप को इस हद तक नम्र किया और क्रूस की मृत्यु तक आज्ञाकारी बना रहा, इसलिए परमेश्वर ने उसे अति महान किया और उसको वह नाम दिया जो सब नामों में श्रेष्ठ है कि यीशु के नाम के आगे हर एक घुटना टिके!

रोमियों 1:3-4 में लिखा है,"अपने पुत्र हमारे प्रभु यीशु मसीह के विषय में प्रतिज्ञा की थी;वह शरीर के भाव से तो दाऊद के वंसा से उत्पन्न हुआ। और पवित्रता की आत्मा के भाव से मरे हुओं में से जी उठने के कारण सामर्थ्य के साथ परमेश्वर का पुत्र ठहरा है।"

(2) यीशु मसीह का ईश्वरीय व मानवीय स्वभाव।

रोमियों 1:3-4 में यीशु मसीह की मानवीय स्वरूप में उच्चतम व निम्नतम स्थिति को दर्शाया गया है ।

यह हमारी समझने में सहायता करता है कि इस अनुच्छेद का अर्थ क्या है,"परमेश्वर का सुसमाचार" उसके अनन्त पुत्र के (उसके ईश्वरीय स्वभाव) सन्दर्भ में है जो उसके मानवीय स्वभाव के दो चरणों प्रगट हुआ: अर्थात,उसके पुनरूत्थान से पहले और उसके पुनरूत्थान के बाद।

(3) यीशु मसीह के दो मानवीय स्वभाव।

उसके पुनरूत्थान से पहले उसके मानवीय स्वभाव को प्रगट किया गया जिसे "शारीरिक भाव से" सम्बोधित किया जाता है(1कुरि15:50),जिसका अर्थ है, उसकी सम्पूर्ण मानवी कमजोरिया,क्योंकि वह दाऊद के वंश में मरियम से पैदा हुआ था, और दाऊद और मरियम दोनों में ही आदम के पाप में गिरने के कारण पतित मानवीय स्वभाव पाया जाता है(याकूब 14:4; भजन 51:5)। यीशु मसीह ने देहधारण के दौरान मानवीय स्वभाव को धारण किया और बिना अपने ईश्वरत्व का त्यागे मानवीय स्वरूप और अपनी सृष्टि में प्रवेश कर गया। इसे उसके मानवीय स्वभाव की निन्दित स्थिति कहा जाता है।

उसके पुनरूत्थान के बाद उसका मानवीय स्वभाव "पवित्रता की आत्मा" के नाम से जाना जाता है(1कुरि 15:44-45),अर्थात वह पूरी तरह पवित्र आत्मा से पूर्ण था, और वह "सामर्थ्य के साथ परमेश्वर का पुत्र"(अर्थात परमेश्वर का सामर्थी पुत्र जो सारे चमत्कारी कार्य करता है) "ठहराया"(ग्रीक: होरिजों: अनावृत, नियुक्त,अधिष्ठापित,घोषित,ठहराया गया)गया था।

उसके पुनरूत्थान के समय में यीशु मसीह के मानवीय स्वभाव को महिमान्वित किया गया था,वह हर एक वस्तु और हर एक जीव पर प्रभुता करने के लिए नियुक्त किया गया था(मत्ती 28:18;इफिसियों 1:20-23;प्रकाशितवाक्य 19:16)। इसे हम उसकी मानवीय अवस्था को महिमान्वित दशा कहते हैं।

रोमियों 1:3-4 में मसीह के मानवीय स्वभाव व उसके ईश्वरीय स्वभाव में कोई विरोधाभास सामने नहीं आता है। यीशु मसीह परमेश्वर के पुत्र बन नहीं गये-वरन वह तो आदि काल से ही परमेश्वर का पुत्र थां। उसका मानवीय स्वभाव उसका ईश्वरीय स्वभाव नहीं बना। परमेश्वर के पुत्र में उसके देहधारण करने से पूर्व,उसके पुनरूत्थान से पहले व उसके मृतकों में से जी उठने के बाद भी ईश्वरीय स्वभाव विद्यमान था।

रोमियों 1:3-4 में मसीह के जन्म के पश्चात और उसके पुनरूत्थान से पहले की दशा की तुलना उसके मृतकों में से जीवउठने के पश्चात उसकी मानवीय स्वभाव की दशा से की गयी है। दोनों ही समयान्तराल में चाहे वह उसके पुनरूत्थान से पहले का समय हो या उसके पुनरूत्थान के बाद का समय उसका मानवीय स्वभाव उसके ईश्वरीय स्वभाव से अलग नहीं हुआ।

रोमियों 1:3-4 दो बातों में भेद प्रगट करता है:

- उसके जन्म के पश्चात उसके मानवीय स्वभाव की निन्दित दशा
- मृतकों में से जी उठने के पश्चात उसके मानवीय स्वभाव की प्रशसां।

पद 3 हमे उन विशेषताओं के बारे में बताता है जो उसके मनुष्य के रूप में जन्म लेने के कारण उसके मानवीय स्वभाव को व्यक्त करती है तथा पद 4 हमें उसके मृतकों में से जी उठने के मानवीय देह के बारे में बताता है।

(4) यीशु मसीह का जन्म

उसके जन्म की इस ऐतिहासिक घटना ने उसे ऐतिहासिक परिस्थितियों के अधीन कर दिया जिसके तहत उसे दाऊद के घराने में पैदा होना था: वह यहूदा के गोत्र में पैदा हुआ, यहूदियों की कानून व्यवस्था के अधीन तथा एक कुंवारी मरियम से पैदा

हुआ। उसके जन्म के द्वारा उसने पाप को छोड़ पवित मानव के सम्पूर्ण दशा को ग्रहण किया। उसका मानवीय स्वभापव "कमज़ोर",मगर इसलिए नहीं कि उसने कोई पाप किया था,वरन संसार भर के पापों के कारण, जो उसने अपने ऊपर उठा लिया और इन्ही पापों के कारण वह मरने भी जा रहा था।

(5) यीशु मसीह का पुनरूत्थान।

उसके पुनरूत्थान की ऐतिहासिक घटना घोषित करती है कि ऐतिहासिक व अनन्त दशा में वह पूरी तरह से पवित्र आत्मा द्वारा नियुक्त था। उसके पुनरूत्थान के द्वारा उसने मानवीय कमजोरियों व पाप और मृत्यु से जुड़ी हर चीज को अलग कर दिया। उसके पुनरूत्थान के बाद से उसका स्वभाव पूरी तरह से रूपान्तरित और पूरी तरह पवित्र आत्मा के वरदानों से परिपूर्ण हो गया, वह इस हद तक पवित्र आत्मा द्वारा नियन्त्रित हो गया कि हम उसे पवित्र आत्मा के रूप में ही जानने लगे। इसी कारण 2 कुरिन्थियों 3:17 में मसीह को "आत्मा " करके सम्बोधित किया गया है। "परमेश्वर आत्मा है"। और इसी कारण 1 कुरिन्थियों 15:45 में मसीह को "जीवन दायक आत्मा"के नाम से दर्शाया गया है! इसी तरह से रोमियों 1:4 में उसके पुनुरूत्थित मानवीय स्वभाव को "पवित्रता की आत्मा" के रूप में सम्बोधित किया जाता है। वह सर्वशक्तिमान के रूप में ठहराया गया और उसे विजयी शक्ति से परिपूर्ण किया गया था, जो सब बातों में शिरोमणी है(मत्ती 28:18) जो उसे उसकी मानवीय दशा में पहले भी दी जा सकती थी। उसके पुनरूत्थान के बाद, यीशु मसीह का मानवीय स्वभाव पवित्र आत्मा की सिद्ध सामर्थ्य और सम्पूर्ण प्रभुता को दर्शाता है।

यीशु मसीह ने दावा किया कि वह संसार का उद्धारकर्ता और सारे जगत का प्रभु है। उसका पुनरूत्थान उसके सारे दावों की वैद्यता का प्रमाण है। और यह उसकी सारी शिक्षाओं का सर्वशक्तिशाली प्रदर्शन है।

2. यीशु मसीह नये नियम की कलीसिया को स्थापित करने के लिए जी उठा।

पढ़ें. यूहन्ना 2:18-22; मरकुस 14:57-58

(1) मसीह के पुनरूत्थान का दूसरा परिणाम यह है कि यीशु मसीह ने नयी अराधना पद्धति के साथ नये मन्दिर का निर्माण किया, जिसे हम कलीसिया के नाम से भी जानते हैं और जिसमें आत्मा और सच्चाई के साथ परमेश्वर पिता की आराधना की जाती है।

यूहन्ना 2:18-22 में यीशु की मृत्यु का अर्थ पुराने नियम के मन्दिर को उसकी पुरानी आराधना पद्धतियों (व्यवस्था के अनुसार) के साथ तोड़ना है। और इसमें यीशु मसीह के जी उठने के द्वारा नये नियम के मन्दिर अर्थात कलीसिया को उसकी नयी पद्धति के साथ (आत्मा और सच्चाई में आराधना)स्थापित करने को दर्शाता गया है।

(2) दृष्टान्त व उनके अर्थ।

जब यीश ने कहा,"इस मन्दिर को गिरा दो और मैं इसे पुन: तीन दिन में खड़ा कर दूंगा?" यह वाक्य यीशु मसीह की मृत्यु और उसके पुन: जीवित होने के लिए दृष्टान्त की रीति पर कहा गया वाक्य है। यीशु मसीह के क्रूस पर चढ़ाए जाने और उसके पुनरूत्थान से करीब तीन वर्ष पहले ही यीशु मसीह ने अपनी मृत्यु और पुनरूत्थान के बारे में भविष्यद्वाणी कर दी थी। यह वाक्य असल में एक पहेली थी क्योंकि इन शब्दों का दोहरा अर्थ था। "मन्दिर" का अर्थ पत्थरों से बनी हुई इमारत या मसीह की देह दोनों हो सकते हैं। "तोड़ने " का अर्थ इतारत का तोड़ा जाना भी हो सकता है या यीशु मसीह की देह की हत्या करना भी हो सकता है। और "जी उठने "का अर्थ इमारत को पुन: खड़ा करने से भी हो सकता है और मसीह की देह का पुनरूत्थान भी हो सकता है।

इस पूरे दृष्टान्त का अर्थ इस प्रकार से है: " मुझे क्रूस पर चढ़ाने के द्वारा, तुम यहूदी लोग मेरी देह के मन्दिर को ढा रहे हो, फिर भी मैं इसे तीन दिनों के बाद मैं पुन: जीवित हो जाऊँगा! मेरी हत्या करने के द्वारा तुम यरूशलेम में पत्थरों से बने मन्दिर को उसकी पुरानी अराधना की पद्धति के साथ तोड़ रहे हो। लेकिन मेरे पुनरूत्थान के परिणाम स्वरूप, मैं नयी आराधना पद्धति के साथ नये लोगों को बनाकर खड़ा कर दूंगा,अर्थात नयी कलीसिया को जो परमेश्वर पिता की आराधना आत्मा और सच्चाई में होकर किया करेगी(यूहन्ना 4:23-24)।"

(3)कोई भी दृष्टान्त से उसके मतलब को अलग नहीं किया जा सकता।

शास्त्र की भाषा में: रूप को कभी उसके प्रतिरूप से अलग नहीं किया जा सकता। "एक रूप" एक व्यक्ति,वस्तु या घटना है जो एक दृष्टान्त के रूप में प्रगट किया जाता है। उसी दृष्टान्ट की भविष्य में प्रगट होने वाली वास्तविकता उसका "प्रतिरूप" कहलाता है। इस्राएल का तम्बू या मन्दिर एक दृष्टान्त है जिसका अर्थ वह स्थान है जहां पर परमेश्वर का आत्मा वास करता है(1इतिहास 13:6)। इसका प्रतिरूप मसीह की देह है, जिसको और गहन मायनों में परमेश्वर की उपस्थिति का स्थान कहा जा सकता है। "मसीह में होकर ईश्वरत्व की सारी परिपूर्णता सजीव रूप में वास करती है।"(कुलुस्सियों 2:9;

कुलुस्सियों 1:15;यूहन्ना 1:1,18;14:9-10)। अत: जो कोइ दूसरे (मसीह की देह को)को नाश करता है,वह पहले को भी(आराधना की पुरानी पद्धति के साथ यरूशलेम के मन्दिर को)नाश करता है।

अत: जब यीशु मसीह को क्रूस पर चढ़ाया गया, मन्दिर व उसके सारे अनुष्ठानों का कोई अर्थ नहीं रहा। इसी कारण जब यीशु मसीह क्रूस पर मरा, मन्दिर का पर्दा ऊपर से लेकर नीचे तक दो भागों में फट गया(मत्ती 27:51)। इसी कारण यीशु मसीह के पुनरूत्थान के बाद मसीही प्रचारकों ने प्रचार किया कि अब उस इमारत का कोई कार्य नहीं रह गया। "परमप्रधान उस हाथ के बनाए मन्दिर में नहीं रहता है"(प्रेरितों 7:48-49;17:24-25)। 70 ई.प. में यीशु को क्रूस पर चढ़ाए जाने के भयानक अपराध के परिणामस्वरूप पत्थरों से बना मन्दिर भी ढा दिया गया(लूका 19:41-44)। यीशु के पुनरूत्थान के बाद से यहूदी या गैर यहूदी विश्वासी यीशु मसीह में होकर परमेश्वर पिता के साथ सीधे पहुँच सकते हैं(इफिसियों 2:18;3:12)[2]।

(3)यीशु मसीह की देह का पुनरूत्थान नये नियम की कलीसिया की स्थापना को दर्शाता है।

यीशु मसीह के खिलाफ पेश की गयी गवाही झूठी थी क्योंकि उसके शब्दों का अर्थ यह लगाया गया था कि वह वास्तव में ईंटों से बने यरूशलेम के मन्दिर की इमारत को तोड़ने और फिर से बनाने के बारे में कह रहा है। जबकि, यीशु मसीह की बात का मतलब किसी दूसरे मन्दिर को बनाने से था,"जो किसी मनुष्य या मिटटी या गारे ने नहीं बनता"(मरकुस 14:58)। इस "दूसरे मन्दिर" का अर्थ कलीसिया है, जो नये नियम में लोगों अर्थात "जीवित पत्थरों" से मिलकर बनता है, जिसे कलीसिया या विश्वासियों की मण्डली अर्थात "परमेश्वर का मन्दिर" भी कहा जाता है(1 कुरि 3:16-17; 2 कुरिन्थियों 6:16; 2 थिस्लुनिकियों 2:4; 1 पतरस 2:4-10)! कलीसिया या नये नियम का मन्दिर वह स्थान है जहां पर परमेश्वर अपनी आत्मा में होकर वास करता है(इफिसियों 2:21-22)। और वे जीवित पत्थर जिनके द्वारा यह नये नियम का मन्दिर बना है वे सारे संसार में रहने वाले मसीही जन हैं(1पतरस 2:9-10)।

(4)यहूदी इस बात को समझने में असफल रहे कि दृष्टान्त के तौर पर कही गयी बात का अर्थ यीशु मसीह की मृत्यु और उसके पुनरूत्थान से था।

यूहन्ना 2 में यहूदी केवल यरूशलेम में पत्थरों से बने मन्दिर को ही देख पाये, जिसे बनाने में हेरोद को 46 वर्ष का समय लगा था। यदि उन्होंने विश्वास करने वाले हृदय के साथ वचन को पढ़ा होता तो उन्हें पता चलता कि ईंटों से बना और अनुष्ठानों से सुसज्जित यरूशलेम का मन्दिर मात्र एक दृष्टान्त(छवि)था, जिसे किसी और बात में पूरा होना था।

पुराने नियम के निम्नलिखित अनुच्छेद दर्शाते हैं कि ईंटों से बना यह मन्दिर, वेदी और बलिदान सब अस्थाई थे।

- 1राजा 8:27 और 2 इतिहास 2:5-6 स्पष्ट रूप में हमें शिक्षा देते हैं कि जीवित परमेश्वर, जिसने सारी कायनात को बनाया है वह मनुष्यों के हाथों से बनाये मन्दिरों में वास नहीं करता। इसीलिए स्तीफनुस और पॉलुस हमें सिखाते हैं कि,"जिस परमेश्वर ने पृथ्वी और उसकी सब वस्तुओं को बनाया, वह स्वर्ग और पृथ्वी का स्वामी होकर हाथ के बनाए हुए मन्दिरों में नहीं रहता;न किसी वस्तु की आवश्यकता के कारण मनुष्यों के हाथों की सेवा लेता है, क्योंकि वह स्वयं ही सब को जीवन और श्वांस और सब कुछ देता है। (प्रेरितों 7:48-49; 17:24-25)
- यिर्मयाह 3:16 में, यिर्मयाह ने भविष्यद्वाणी की उसका विचार भी लोगों के मन में न आएगा, और न लोग उसके न रहने से चिन्ता करेंगे और न ही उसकी मरम्मत की जाएगी।
- इब्रानियों 10:5-7 में यूनानी भाषा में पुराने नियम से भजन संहिता 40:6-7 को उद्धत किया गया है। वहा लिखा है,"मेल बलि और अन्नबलि से तू प्रसन्न नहीं होता, तू ने मेरे कान खोदकर खोले हैं,होम बलि और पापबलि तू ने नहीं चाहा।तब मैंने कहा,"देख,मैं आया हूँ; क्योंकि पुस्तक में मेरे विषय ऐसा ही लिखा हुआ है।" यह अनुच्छेद हमें सिखाता है कि यीशु मसीह की मृत्यु में पुराने नियम के सारे बलिदान पूर्ण हो जाते हैं।
- केवल यहूदी ही नहीं यीशु मसीह के चेले भी देखने में नाकमायाब रहे कि जिस "मन्दिर" के बारे में यीशु यूहन्ना 2 में बात कर रहे थे, वह स्वयं उसकी देह का मन्दिर था। केवल यीशु के तीसरे दिन मुर्दों में जी उठने के बाद वे यीशु की बातों के आत्मिक मतलब को समझ पाये थे!

2.इसी लिए "ट्रिब्यूलेशन टेम्पल" और "मिलेनियल टेम्पल" की व्यवस्थित शिक्षा देना बिल्कुल गलत है।

3. यीशु मसीह मसीहियों को एक नया शुद्ध जीवन प्रदान करने के लिए जी उठे।

पढ़ें रोमियों 6:1-7।

(1) यीशु मसीह के पुनरूत्थान का तीसरा परिणाम यह है कि यीशु मसीह मसीहियों को वर्तमान में एक नया व शुद्ध जीवन प्रदान करता है।

विश्वास के द्वारा(रोमियों 5:1;इफिसियों 1:13),विश्वासी आत्मिक तौर पर यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरूत्थान से जुड़ गये हैं। रोमियों 6:1-7 में मसीह के पुनरूत्थान के साथ उनकी एकता प्राथमिक तौर पर पृथ्वी पर वर्ततान में रूपान्तरित जीवन व भविष्य में उनकी पुनरूत्थित देह को दर्शाती है। रोमियों 6:5 के आधार पर यह तर्क सामने आता है कि मसीह की मृत्यु और उसके दफन में एक होने को उसके साथ पुनरूत्थान में धनिष्टता से अलग नहीं किया जा सकता। मूल ग्रीक भाषा में भविष्यकाल भविष्य के कामों को नहीं दर्शाता वरन वर्तमान के निश्चय को प्रगट करता है। यह बात सुनिश्चित है कि मसीही लोग मसीह की मृत्यु और उसके पुनरूत्थान में धनिष्ठता से एक हो गये हैं और जिसके परिणाम स्वरूप एक तरफ तो उन्हें "धर्मी ठहराया गया है" और दूसरी ओर नैतिक पवित्रता प्राप्त हुई है। इसी तरह से, यह सुनिश्चित है कि मसीही घनिष्ठता से मसीह के पुनरूत्थान में एक हो चुके हैं और इसका परिणाम,"पवित्र जीवन" हुआ है। कानूनी तौर पर धर्मी ठहराये जाने का अर्थ है कि विश्वासियों को पाप के दण्ड से छुटकारा मिल चुका है। उन्होंने क्षमा पायी है,उन्हें धर्मी ठहराया गया और धर्मी जानकर ही व्यवहार किया गया है। नैतिक पवित्रता का मतलब है कि विश्वासियों को पाप की शक्ति से छुटकारा मिल गया है। वे अब अपने पापम स्वभाव के गुलाम नहीं वरन शुद्धता में उन्नति करने के योग्य हैं।

प्रायश्चित के तौर पर यीशु मसीह की मृत्यु धर्मी ठहराये जाने के लिए जरूरी थी और उसके कारण निश्चय ही विश्वासियों को धर्मी ठहराया गया है। इसी प्रकार से महिमित देह में यीशु मसीह का पुनरूत्थान भी विश्वासियों के पवित्रीकरण के लिए जरूरी था और जिसका परिणाम निश्चय तौर पर उनका पवित्रीकरण होगा। मसीहियों को निश्चित तौर पर इस धरती पर रहते हुए पवित्रता के क्षेत्र में मसीह के समान बनना चाहिए। रोमियों 6 की सारी चर्चा धर्मी ठहराये जाने और पवित्रीकरण के बीच सम्बन्ध के इर्द गिर्द की घूमती है।

(4)यीशु मसीह भविष्य में देह के पुनरूत्थान को सुनिश्चित करने के लिए पुनः जी उठा।

पढें. यूहन्ना 5:28-29; 1 कुरिन्थियों 15:42-54; फिलिप्पियों 3:20-21;1 थिस्लुनिकियों 4:14-16।

(1) मसीह के पुनरूत्थान का चौथा परिणाम यह था कि मसीहियों को यीशु के दूसरे आगमन पर यीशु के समान जी उठने का निश्चय प्राप्त हो गया।

यीशु मसीह का पुनरूत्थान इस बात की गारन्टी है कि मसीहियों की देह भी मृतकों में जिलायी जाएंगी। यीशु मसीह के पुनःआगमन पर, जितने मसीहियों ने इस धरती पर जीवन व्यतीत किया है वे तुरन्त मुर्दों में से जी उठेंगे और अनन्त मानवीय आत्मा में जुड़ जाएंगे जो यीशु मसीह के साथ आयी(1थिस्लुनिकियों 4:14;कुलुस्सियों 3:4)। और जितने मसीही लोग आज जीवित हैं यीशु मसीह के दूसरे आगमन पर पलक झपकते ही आत्मा में (1कुरिन्थियों 15:51-52) और देह में (फिलिप्पियों 3:21)रूपान्तरित हो जाएंगे। अतः सारे मसीही यीशु मसीह के समान अनन्त जीवन के लिए स्वर्ग और नयी धरती पर महिमित अमर आत्मा और देह प्राप्त करेगें।

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***[प्रतिक्रियाएं]*** **दूसरों के लिए प्रार्थना करें**

अपनी बारी आने पर आपने जो कुछ आपने सीखा है *उसके प्रतिउत्तर के रूप में समूह में प्रार्थना करें।*
या समूह को दो या तीन भागों में बांट लें और आज प्राप्त शिक्षाओं के प्रतिउत्तर के रूप में परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	**[निर्धारित कार्य]** **अगले अध्याय के लिए**

(समूह के अगुवे. समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें।)

1. **समर्पण** : चेले बनाने तथा मसीह की कलीसिया की स्थापना करने के प्रति समर्पित हों

2.यूहन्ना रचित सुसमाचार के परिचय पर -किसी दूसरे व्यक्ति या समूह को -प्रचार करें,शिक्षा दें या बाइबल अध्ययन पर ध्यान लगाएं।

3. **परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय**। 1 कुरिन्थियों 2-5 में से आधे अध्याय पर एकान्त में मनन करें। पसन्द आने वाले विचार को लिखने के तरीके का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।

4. **याद करें। ड. श्रृंखला "मसीही चरित्र"** का पुनरावलोकन करें। (1) मसीह की समानता: 2कुरिन्थियों 5:17,(2)शुद्धता: 1पतरस 2:11, (3) प्रेम: मरकुस 12:30-31,(4) विश्वास: रोमियों 4:20-21,(5) नम्रता: फिलिप्पियों 2:3-4। रोज कम से कम 5 उन बाइबल आयतों को दोहराए जिन्हें आपने पहले याद किया था।

5.**बाइबल अध्ययन:** अपने घर पर ही अगले बाइबल अध्ययन की तैयारी करें। **यूहन्ना 1:19-51।** बाइबल अध्ययन के पांच कदमों का इस्तेमाल करें।

6.**प्रार्थना।** इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।

7.मसीह की कलीसिया बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे का अद्यपन करें । जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।